जी-20 देशों की संस्कृति-साहित्य की एक प्रदर्शनी

भारत की आजादी के 75 साल और जी-20 की अध्यक्षता मिलने का जश्न नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का एक प्रमुख आकर्षण है। जी-20 देशों की कला, संस्कृति और साहित्य को प्रदर्शित करने के लिए एक समर्पित मंडप स्थापित किया गया है। विदित हो कि जी-20 या बीस देशों का समूह, आर्थिक सहयोग का एक अंतरराष्ट्रीय मंच है और इसमें 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं। शुरुआत में यह वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों का संगठन हुआ करता था। इसका पहला सम्मेलन दिसंबर 1999 में जर्मनी की राजधानी बर्लिन में हुआ था। 2008 में दुनिया ने भयानक मंदी का सामना किया था। इसके बाद इसे शीर्ष नेताओं के संगठन में तब्दील कर दिया गया। अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, यूरोपियन यूनियन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका इसके सदस्य हैं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की 50 वर्षों की यात्रा को चिह्नित करने के साथ ही, इस वर्ष हमारे पास उन देशों की कला, संस्कृति और साहित्य को प्रदर्शित करने के लिए एक समर्पित जी-20 मंडप है, जो जी-20 फोरम का हिस्सा है।

माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने 'एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य' की दृष्टि के साथ भारत के जी-20 प्रमुख पद के जी-20 लोगो का लोकार्पण किया था। यह भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों—केसरिया, सफेद और हरे एवं नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प 'कमल' को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो चुनौतियों के बीच विकास का प्रतीक है। पृथ्वी, जीवन के प्रति भारत के पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसका प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य है। जी-20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में 'भारत' लिखा है।

भारत का जी-20 अध्यक्षता का विषय—'वसुधैव कुटुम्बकम' है जो उपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। अनिवार्य रूप से, यह विषय सभी प्रकार के जीवन मूल्यों—मानव, पशु, पौधे, सूक्ष्मजीव और पृथ्वी एवं व्यापक ब्रह्मांड में उनके परस्पर संबंधों की पुष्टि करता है।

पुस्तक मेला के मंडप (हॉल नंबर 4) भारत, फ्रांस, रूस, मेक्सिको, जापान, ब्राजील, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया और तुर्की सहित जी-20 देशों में से नौ के साहित्य जिसमें कहानियाँ, कथेतर साहित्य, इतिहास, अर्थव्यवस्था, स्वदेशी, संस्कृति आदि जैसी विभिन्न विधाओं की पुस्तकों को प्रदर्शित करता है।

जी-20 मंडप का एक अन्य प्रमुख आकर्षण इतिहास की दीवार है, जिसने पिछले वर्षों में अपनी यात्रा का दस्तावेजीकरण किया है। दीवार में सदस्य देशों का इतिहास, विजन और भविष्य के लक्ष्य प्रदर्शित किए गए हैं। इसके साथ ही भारत ने अपनी जी-20 अध्यक्षता के दौरान जिन कार्यक्रमों की योजना बनाई है, उन्हें भी भलीभाँति रूप से प्रलेखित और प्रदर्शित किया गया है। मंडप में एक साउंड शावर भी है। यह एक ऑडियो तकनीक है, जो आपको जी-20 के बारे में जानने के लिए अनूठा अनुभव देती है। विदित हो, जी-20 समूह में दुनिया की 60 प्रतिशत आबादी वैश्विक जीडीपी का 80 प्रतिशत और वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत शामिल है।

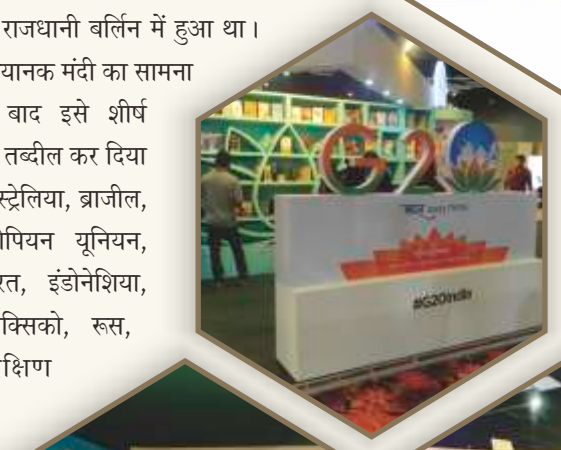

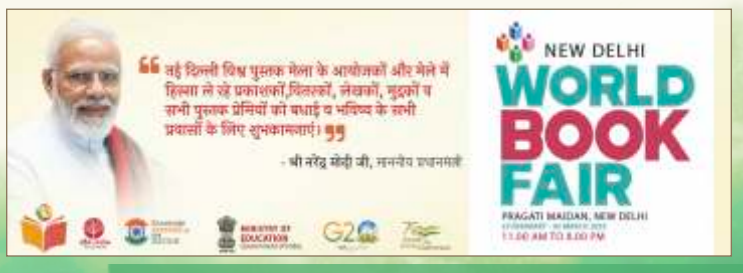

हलचल

ऑस्ट्रियाई उपन्यास 'महानगर वियना' पर एक चर्चा

ऑस्ट्रिया के लेखक पीटर रोजी के उपन्यास के हिंदी अनुवाद 'महानगर वियना' पर विमर्श में सुश्री रमा पांडे, सच्चिदानंद जोशी, विकास झा, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी और अनुज कुमार शामिल हुए। रमा पांडे ने 'छाया अनुवाद' के बारे में बात की और बताया कि इस अनुवाद कार्य में उन्होंने इसका प्रयोग किस तरह किया। विमर्श में यह बात सामने आई कि वियना पर आधारित कृति का अनुवाद करते हुए भारतीय संस्कृति को बनाए रखना जरूरी है। 'महानगर वियना' नई सदी के नए महानगर का चेहरा दिखाता है, युद्ध के बाद की पीड़ा से घिरा समाज। चर्चा में जर्मन, ऑस्ट्रियाई और भारतीय साहित्य के बीच समानता पर भी बात हुई।

भारत-स्पेन साहित्यिक संवाद

स्पेन के प्रसिद्ध लेखक ऑस्कर पूजोल के साथ नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के संपादक कुमार विक्रम की बातचीत का आयोजन किया गया। श्री पुजोल की 15 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें 'डिक्केनेरी संस्क्रित-कातालाा' भी शामिल है। वे कासा एशिया (2002-2007) के शैक्षिक कार्यक्रमों के निदेशक के रूप में काम करते रहे हैं। श्री पुजोल के साथ बातचीत हिंदी में हुई, जिसमें उनके भारत में एक पर्यटक के रूप में आने और फिर संस्कृत भाषा में महारत हासिल करने और अंततः नई दिल्ली के इंस्टीट्यूटो सर्वेंटेस के निदेशक बनने तक की उनकी यात्रा के बारे में बात की गई थी। उन्होंने बड़े मनोयोग से श्लोकों का पाठ किया और ईसाई धर्म तथा हिंदू धर्म की शिक्षाओं में समानता के बारे में बात की। उन्होंने आगे स्पेनिश भाषा में विचार रखे और बताया कि कैसे यह विभिन्न तरीकों से हिंदी के समान है। उन्होंने संचार माध्यमों के माध्यम से सीखने पर जोर दिया।

ईरान में प्रकाशित फ़ारसी पुस्तकों का परिचय और विमोचन

फ़ारसी साहित्य पर आयोजित एक पैनल चर्चा में डॉ. सैयद मेहदी तबताबाई, डॉ. अली रमज़ानी, डॉ. मोहम्मद हुसैन ज़रीफ़ियान और हामिद हेसाम शामिल थे। सत्र का संचालन श्री मेहदी बकर ने किया। चर्चा ईरान और भारत में प्रकाशन के क्षेत्र, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में समानता और दोनों देशों के बीच वास्तुकला, इतिहास और साहित्य में एकरूपता पर केंद्रित थी। डॉ. अली रमज़ानी ने कहा कि, 'मुझे यहाँ आकर खुशी हो रही है। मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं नेशनल बुक ट्रस्ट और भारत सरकार का आभार व्यक्त करता हूँ।' उन्होंने भारत और ईरान के बीच संबंधों और उन ऐतिहासिक संबंधों पर जोर दिया जो 1800 साल पुराने हैं। ईरान में हर साल 80,000 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। यह बताते हुए डॉ. सैयद मेहदी तबताबाई ने 'दीवान-ए-बेदिल' और बेदिल के साहित्य पर बात की। डॉ. मोहम्मद हुसैन ज़रीफ़ियान ने नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की विशेषताओं और उपलब्धियों की सराहना की। दोनों देशों के साहित्य के संगम की सराहना की गई और बताया गया कि कैसे साहित्य आम आदमी का होता है और आम आदमी द्वारा निर्मित होता है। फारसी साहित्य में महिलाओं का योगदान और पिछले कुछ वर्षों में यह कैसे उल्लेखनीय रूप से विकसित हुआ है, यह भी चर्चा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। वक्ताओं ने भारत-ईरानी संबंधों के इतिहास, द्विपक्षीय संबंधों के संदर्भ में अनुवाद के महत्व और फ़ारसी भाषा और साहित्य के विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की।

नई शिक्षा नीति : 21वीं सदी में भारत की सफलता का मार्ग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा 'नई शिक्षा नीति : 21वीं सदी में भारत की सफलता का मार्ग' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में प्रो. प्रमोद मेहरा और प्रो. राजेश मेहता वक्ता थे। सत्र में नई शिक्षा नीति-2020 (एनईपी) पर प्रकाश डाला गया, जो शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तनकारी और क्रांतिकारी साबित हुई है। 'सार्वभौमिक प्रयोज्यता' वर्तमान नीति का प्रमुख आदर्श वाक्य है और इसके चार प्रमुख स्तंभों में सुगमता, सामर्थ्य, समानता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा शामिल हैं। वक्ताओं ने एनईपी में पेश की गई नई अवधारणाओं में से एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) पर प्रकाश डाला। एनईपी की 'प्रवेश' और 'निकास' सुविधा एक बड़ा कारक है क्योंकि यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है। व्यावहारिक प्रयोज्यता को लागू किया जा रहा है ताकि छात्रों को उनके करियर में एक प्रमुख मंच मिल सके। इस नीति के तहत छात्रों को विभिन्न विश्वविद्यालयों को चुनने के लिए एक मंच प्रदान किया जा रहा है। वक्ताओं द्वारा जोर दिया गया कि एनईपी का मुख्य फोकस शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करना है जो अधिक लचीली, जन-केंद्रित हो, जिससे विशेषज्ञता और आंतरिक ढाँचा तैयार हो सके। इस चर्चा का एक अन्य प्रमुख फोकस डिजिटल रूप से पठन सामग्री के निर्माण की अवधारणा थी। इस अवधारणा को 'बर्न डिजिटल टेक्स्ट' के रूप में भी जाना जाता है।

भारत की भाषाओं में रूसी साहित्य : अनुवाद पर अनुदान

इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन (मॉस्को) द्वारा आयोजित तथा अनुवादक सोनू सैनी द्वारा संचालित विमर्श में एवगेनी रेज्निचेंको, रंजना सक्सेना और अरुणिम बंद्योपाध्याय शामिल हुए। विमर्श का केंद्र था भारत की विभिन्न भाषाओं में रूसी साहित्य। एवगेनी रेज्निचेंको ने रूसी साहित्य को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने के लिए पूरी दुनिया में 1500 से अधिक अनुदान प्रदान करने में इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन के योगदान की जानकारी दी। उन्होंने कहा, 'भारत का हमारे दिलों में एक विशेष स्थान है, इसलिए हम यहाँ हैं।' रूस का अनुवाद संस्थान 2010 से भारतीय अनुवादकों के साथ काम कर रहा है। रंजना सक्सेना ने साझा किया कि संस्थान से प्राप्त सहयोग के कारण रूसी की 50 से अधिक पुस्तकों का बांग्ला, मराठी, गुजराती और विभिन्न अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। अनुवाद के कारण रूसी साहित्य का भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण प्रसार हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले ने दुनिया भर के अनुवादकों को आपस में मिलने, विचारों का आदान-प्रदान करने और अनुवाद से संबंधित चुनौतियों पर चर्चा करने का मौका दिया है। बंगाली-रूसी अनुवादक अरुणिम बंद्योपाध्याय ने कहा, 'किसी भाषा का अनुवाद करने के लिए, आपको उसके गहरे अर्थ में जाना होगा और उसकी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा को महसूस करना होगा। यह बहुत चुनौतीपूर्ण है, जब आप उन चीजों का अनुवाद करते हैं जो बंगाली संस्कृति के लिए अज्ञात हैं।'

पुस्तकें हमारी सोच का दायरा बढ़ाती हैं : अन्नपूर्णा देवी

"नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला युवा मानस, पाठकों, लेखकों और प्रकाशकों के लिए एक त्योहार है। यह सुधी पाठकों और लेखकों को एक-दूसरे को जानने का अवसर

प्रदान करता है। पुस्तकें हमारे सोच का दायरा बढ़ाती हैं।" ये उद्गार केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने 'गणेश शंकर विद्यार्थी' और 'नानाजी देशमुख : एक महामानव' पुस्तक विमोचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, ऐसे में सम्मानित अतिथि देश 'फ्रांस' मेले में मौजूद है, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के संयुक्त वक्तव्य के आधार पर दोनों देशों के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के आदान-प्रदान के लिए यह अनूठा मंच है। इससे पहले भारत पेरिस पुस्तक मेले का अतिथि देश था। इस पुस्तक मेले में 'आजादी के अमृत महोत्सव', 'नई शिक्षा नीति' और 'जी-20' के लिए विशेष मंडप स्थापित किए गए हैं जो भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी, शिक्षा में बदलाव और दुनिया में भारत के प्रतिनिधित्व को दर्शाता है।

पुस्तकों के संबंध में उन्होंने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी और नानाजी देशमुख, दोनों ने दधीचि की भूमिका निभाई है। पहला यह कि उत्कृष्ट पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दंगाई भीड़ की बीच जान गँवाई। कहा जाता है कि जब "उनकी कलम चलती थी तो अंग्रेजी शासन की नींव हिलती थी।" नानाजी के संबंध में उन्होंने कहा कि वे एक समाज सुधारक थे। उन्होंने मंत्री पद ठुकराकर सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया और समाज सेवा में जुट गए। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन में विश्व स्तर की पुस्तकों का संकलन होता है, इस महती कार्य के लिए उन्होंने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत को बधाई दी। इस अवसर पर न्यास-अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि विश्व पुस्तक मेला पाठकों को पुस्तकों की ओर खींचता है। यहाँ पुस्तकों के लोकार्पण की पुरानी परंपरा है। उन्होंने विमोचित पुस्तकों के व्यक्तित्वों का संक्षिप्त परिचय दिया। इससे पहले माननीय मंत्री जी ने मेले का भ्रमण किया और यहाँ स्थापित विभिन्न मंडपों की विस्तृत जानकारी ली। वे प्रदर्शन और मंडपों की विशेषताओं के बारे में जानने के लिए उत्सुक दिखाई दीं। विमोचन कार्यक्रम में न्यास-निदेशक और मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक मौजूद रहीं।

गांधी और टॉलस्टॉय समानता व न्याय के पक्षधर थे : सर्गेई लावरोव

"महात्मा गांधी और लियो टॉलस्टॉय भारत और रूस दोनों के लिए लोकप्रिय शख्सियत हैं। गांधी, टॉलस्टॉय से काफी प्रभावित थे। वे उनके समानता और न्याय के विचार के पक्षधर थे।" उक्त उद्गार भारत में तीन दिवसीय यात्रा पर आए और मेले में पधारे रूस के माननीय विदेश मंत्री श्री सर्गेई लावरोव ने 'टॉलस्टॉय-गांधी प्रदर्शनी' के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि दोनों व्यक्तित्व कभी नहीं मिले, लेकिन दोनों के बीच पत्र-व्यवहार लगातार होता रहा। दोनों ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ रहे। यह समय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हाल ही में हमने महान दार्शनिक और लेखक टॉलस्टॉय का 190वाँ और महात्मा गांधी का 150वाँ जन्मदिन मनाया। जी-20 के संबंध में उन्होंने कहा इस वर्ष का जी-20 शिखर सम्मेलन भारत में आयोजित किया जा रहा है। ऐसे में इसके सदस्य के रूप में भारत के प्रतिनिधित्व को दर्शाते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने मेले में जी-20 पवेलियन तैयार किया है। इस अवसर पर शेरपा (जी-20 समूह के सदस्य देशों के नेताओं के प्रतिनिधि) श्री अमिताभ कांत ने कहा कि गांधी और टॉलस्टॉय के विचारों को अपनाने की आवश्यकता है। दोनों आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने तत्कालीन थे। गांधी टॉलस्टॉय को दार्शनिक मानते थे और उनके आदर्शों पर चलना चाहते थे और चले भी। वे उनकी तीन चीजों को अपनाना चाहते थे—सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह। भारत, रूस के प्रगाढ़ मित्रों में से एक है। इस अवसर पर न्यास-अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि यदि हम भारतीय परंपरा की दृष्टि से देखें तो दोनों ही ऋषि परंपरा को मानते थे। उन्होंने

समाज का मार्गदर्शन किया। दोनों का ही विश्व स्तर का साहित्य है। वे स्वतंत्रता आंदोलन के समर्थक थे, लेकिन अहिंसात्मक रूप से। मंच पर उपस्थित राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक श्री युवराज मलिक ने कहा कि टॉलस्टॉय और गांधी की पुस्तकों को बिना पढ़े जीवन अधूरा है। एक, दुनिया के महान लेखकों में से है और दूसरा, लेखकों का लेखक है। भारत और रूस साहित्यिक और नैतिक मूल्यों से जुड़े हैं। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. रंजना सक्सेना उपस्थित रहीं। उद्घाटन सत्र के बाद माननीय मंत्री ने प्रतिनिधिमंडल के साथ मेले का अवलोकन किया। संचालन रूसी भाषा के अनुवादक संघ के अध्यक्ष डॉ. सोनू सैनी ने किया।

बाल मंडप

'अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो, ईना मीना मो
रंग-बिरंगी कहानियों से दुनिया को भर दो'

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा कहानीकार डॉ. शिवानी कनोडिया के 'कहानी सुनाओ सत्र' का आयोजन किया गया जिसके प्रायोजक थे इंडियन ऑयल कंपनी लिमिटेड।

एयर फोर्स, दिल्ली वर्ल्ड, विद्या जैन पब्लिक विद्यालय, गुरु हरिकृष्ण पब्लिक विद्यालय के बच्चों ने डॉ. शिवानी की काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान पर आधारित कहानी 'बनबन गैंडे की कहानी' का खूब आनंद लिया। इंडियन ऑयल कंपनी लिमिटेड की

पहली महिला निदेशक श्रीमती सुकला मिस्त्री ने भी इस कार्यक्रम की खूब सराहना की।

'मेले का नाम सुनते ही सब मनोरंजन का ही सोचते हैं, पर यह पुस्तक मेला है साहब, सिर्फ मनोरंजक ही नहीं, ज्ञानवर्धक भी है।' बाल मंडप में कई रुचिकर प्रस्तुतियों के बाद बच्चों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वर्तनी प्रतियोगिता, निबंध लेखन और शब्द खोजो पहेली जैसी प्रतियोगिताएँ भी राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित की गईं। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़-चढ़कर अपने सामान्य ज्ञान, विज्ञान और इतिहास ज्ञान का परिचय दिया।

विज्ञान प्रसार ने किया पुस्तक लोकार्पण

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की संस्था विज्ञान प्रसार की दो पुस्तकों 'पैकेजिंग साइंस फॉर पब्लिक इंटरेस्ट' (संपादक : नकुल पाराशर, निमिश कपूर एवं सुमिता मुखर्जी) तथा 'मिनिमम सांइस फॉर एवरीबडी' (लेखक : राकेश पोपाली एवं

अशोक सिन्हा) का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माइक पाण्डेय, पर्यावरण एवं वन्य जीव फिल्म निर्माता ने कहा कि ये पुस्तकें ऐसे समय में आई हैं जब हमारे पर्यावरण की विकट स्थिति है। पर्यावरण प्रदूषण से हमारी संचार व्यवस्था तो प्रभावित है ही, जन-जीवन को भी काफी क्षति पहुँच रही है। गंगा का 80 प्रतिशत प्रदूषण हमारे घरों से होता है। वास्तविक रूप में कहा जाए तो आज विज्ञान और वैज्ञानिक ही हमारे जीवन के रक्षक हैं। अतः विज्ञान की उपयोगिता का लाभ प्रत्येक क्षेत्र को मिले। कार्यक्रम में मुख्य रूप से वाई.एस. गिल, रश्मि शर्मा, अमरीश सक्सेना, हसन जिया, जाहिद हुसैन खाँ, नकुल पाराशर (प्रबंधक, विज्ञान प्रसार) एवं गगन गुप्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अपराजिता मेहरा ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

केंद्रीय संचार ब्यूरो द्वारा नृत्य एवं गीत की मधुर प्रस्तुति के अंतर्गत डॉ. चंदना राउत ने ओडिसी नृत्य में देवी माँ का मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अन्य गीतों के गायक, कलाकार थे—अक्षय नागर, अंजली, दृटि दीपा, संघमित्रा चक्रवर्ती और विश्वजीत पॉल। कार्यक्रम में वाद्य कलाकार थे—मिहिर नट्टा-तबला, सतीश सोलंकी-ऑक्टोपैड, हरीशचंद्र पति-पखावज, लावण्य अबादे-सितार, लोकेश आनंद-शहनाई, नरेश-विकल-सिंथेसाइजर, मेघसुंदर मुखर्जी-वायलिन और चारू ब्रहम-मेंडोलिन। सातवीं डोगरा रेजिमेंट के आर्मी बैंड कलाकारों ने अपने मधुर आंचलिक गानों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वाद्य पर संगत कलाकार थे—विक्रम-पियानो, बलकार सिंह-इलेक्ट्रिक गिटार, आशीष-पैड, अभिशेख-ड्रमर, सोमसुंदर-बेस गिटार। कार्यक्रम के संयोजक थे—अशोक कुमार।

प्रसिद्ध कवि कुमार विश्वास ने प्रभात प्रकाशन की पुस्तक 'देखो हमरी काशी' (हेमंत शर्मा) का लोकार्पण किया।

साहित्यिक गतिविधियाँ

भारतीय भाषाओं में समन्वय की जरूरत : केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र द्वारा भारतीय भाषाओं में संवाद और समन्वय विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अनिल शर्मा 'जोशी' (उपाध्यक्ष केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा) ने की। अतिथि वक्ता के रूप में श्री रवि टेकचंदानी (सिंधी साहित्यकार), डॉ. वी. पद्मावती (तमिल साहित्यकार), डॉ. ओम निश्चल (प्रख्यात आलोचक एवं भाषाविद्), रविन्द्र कुमार और डॉ. राजेश कुमार (सदस्य, केंद्रीय हिंदी शिक्षण संस्थान) उपस्थित रहे। चर्चा का संचालन डॉ. योगेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। श्री रवि टेकचंदानी ने सिंधी और हिंदी के अंतर्संबंध पर कहा कि "भारतीय संस्कृति का मूल वसुधैव कुटुंबकम् है। सिंधी अकादमी अपना सारा काम हिंदी में ही करती है। हिंदी और सिंधी के बीच सेतु का निर्माण सदियों पहले ही किया जा चुका है।" डॉ. वी. पद्मावती ने कहा कि "मैं चाहती हूँ कि हमारी सारी धरोहर (तमिल साहित्य) को हिंदी तक पहुँचा सकूँ, पर मैं इसमें सफल नहीं हो पा रही। समय के साथ तमिलनाडु में हिंदी के लिए माहौल बदल गया है।" डॉ. ओम निश्चल ने कहा कि "भारतीय भाषाओं में समन्वय अनुवाद के जरिए ही संभव है, हिंदी का कोई अपना व्याकरण नहीं है, इसने अपने शब्दों को अन्य भारतीय भाषाओं और विश्वतर की भाषाओं से लिया है।" रविन्द्र कुमार ने अनुवाद और अनुवादक का महत्व बताते हुए एक किस्सा सुनाया, जब उनसे एक पाकिस्तानी शायर ने उनका नाम पूछा पर वह समझ नहीं पाए। श्री अनिल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि "समन्वय की बात करते समय हमारे सामने शंकराचार्य का इतिहास खड़ा हो जाता है। हमें समस्त भाषाओं के बीच एकता की राह निकालनी चाहिए।"

नेहा प्रकाशन द्वारा व्यंग्यकार मनीष शुक्ल के प्रथम कविता संग्रह 'निलंबित मौन के स्वर' के साथ डॉ. रश्मि कौशल रचित 'मैं प्रेम हूँ' (राधा जी के संपूर्ण जीवन पर आधारित), डॉ. संगीता की पुस्तक 'भारतीय अध्यात्म एवं ध्यान वर्तमान संदर्भ में' का विमोचन चंद्रभूषण सिंह के संचालन में हुआ। वक्ता साध्वी प्रज्ञा भारती ने चर्चा को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए कहा कि जीवन में किताबों का बहुत महत्व है। शिवशक्ति बक्शी (संपादक, कमल संदेश) ने विमोचित पुस्तकों के संदेश को जीवन में आत्मसात् करने को कहा। श्री विभूति मिश्र (ब्यूरो चीफ, न्यूज इंडिया) ने मौन की बेचैनी को अभिव्यक्त करती कविताओं की चर्चा की। लेखक मनीष शुक्ल ने कहा कि निलंबित मौन का स्वर प्रत्येक व्यक्ति के पास होता है।

युवा पीढ़ी की रैखिक समझ को सर्वांगीण बनाने का ध्येय—राजेंद्र भट्ट

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत लगभग बीस पुस्तकों को प्रकाशित किया गया है। जिसमें आज श्री व्यास त्रिपाठी द्वारा रचित 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम' और राजेंद्र भट्ट की 'पूरा विश्वास है' का लोकार्पण हुआ। प्रकाशन विभाग की महानिदेशक सुश्री अनुपमा भटनागर ने सभा में मौजूद सभी बुद्धिजीवियों, आगंतुकों का स्वागत किया। श्री राजेंद्र भट्ट ने अपनी पुस्तक के बारे में कहा कि स्वाधीनता संग्राम के संबंध में रैखिक समझ रखने वालों को अपनी समझ को विकसित करना होगा। छोटी मानसिकता से हम कुछ सीख नहीं सकते बल्कि जो हमारी अच्छी समझ है वो भी समाप्ति की ओर जाएगी। पुस्तक के वर्णित बेगम हजरत महल, राजकुमारी अमृत कौर, सरोजनी नायडू, उदा देवी पासी और दुर्गा देवी जैसी लगभग बीस महिलाओं की शौर्यगाथा को नई दृष्टि से रखने का प्रयास किया है। श्री भट्ट ने कहा कि इस विषय पर अनेक पुस्तकें पब्लिक डोमेन में मौजूद हैं तो क्या आवश्यकता है ऐसी किताबों का सृजन किया जाए। उन्होंने उदाहरण दिया कि रामायण और महाभारत पर हजारों वर्षों से लिखा जा रहा है फिर भी हम उन पात्रों और उस समय की दृष्टि को नई समझ के साथ पढ़ रहे हैं। नए लेखकों की दृष्टि को भी समझ रहे हैं। अर्थात शोध का विषय रुकना नहीं चाहिए बल्कि वो अनवरत रूप से नए-नए रूपों में पाठकों के मध्य पहुँचना चाहिए। कार्यक्रम में रा.पु. न्यास की पूर्व प्रधान संपादक डॉ. वर्षा दास ने गांधी जी के असहयोग आंदोलन के संबंध में अपने विचार रखे। गांधी जी के अहिंसात्मक प्रयास और गांधी दर्शन पर विमर्श करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में नौजवानों को गांधी जी को समझना होगा, उनकी तपस्या को अपने चाल-चरित्र में शामिल करना होगा। तभी इस देश का विकास संभव है। इस कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चतुर्वेदी ने किया। अंत में योजना पत्रिका की संपादक सुचिता चतुर्वेदी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के सहयोग से श्री अरबिंदो आश्रम (दिल्ली शाखा) द्वारा बच्चे के सर्वांगीण विकास में चिंतन की भूमिका पर एक सत्र आयोजित किया गया। सुश्री श्रील बसु और जयंती रामचंद्रन वक्ता थे। चर्चा की शुरुआत इस बात से हुई कि जब बच्चों को एक साथ कई काम करने को कहा जाता है तो उनका फोकस कैसे कम हो जाता है। वक्ताओं ने उल्लेख किया कि एनईपी 2020 में एक नया विजन है। यह 'क्या सीखें' के बजाय 'कैसे सीखें' पर जोर देकर भारतीय शिक्षा को बदलना चाहता है। डॉ. जयंती रामचंद्रन ने कहा कि स्वयं पर चिंतन करने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसे आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने श्री अरबिंदो की शिक्षा के पाँच सूत्र का उल्लेख किया : शारीरिक (शरीर और सद्भाव), महत्वपूर्ण (शक्ति और शक्ति), मन (मानसिक शिक्षा) और आध्यात्मिक (मानसिक और आध्यात्मिक शिक्षा)। जब समग्र शिक्षा की बात आती है तो ये घटक अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

डॉ. श्रील बसु ने दैनिक जीवन में आत्म-चिंतन के बारे में बात की। उन्होंने उल्लेख किया कि आत्म-चिंतन से बच्चे को अखंडता, आत्म-मूल्य, शांति और आत्म-पहचान विकसित करने में मदद मिलती है। बातचीत में कुछ मानसिक गतिविधियाँ भी शामिल थीं, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा। सत्र के समापन पर दो पुस्तकों का विमोचन किया गया—'अंतर आत्मा और लिविंग विदिन'।

सब कुछ बाद में, राष्ट्र प्रथम—उदय माहुरकर : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित प्राइम टाइम चर्चा में सूचना आयुक्त, भारत सरकार श्री उदय माहुरकर ने अपने जीवन के जटिल संघर्ष की जानकारी दी। उन्होंने अपनी पत्रकारिता की शुरुआत ही इंडियन एक्सप्रेस से की और फिर तैंतीस वर्षों तक इंडिया टुडे में अपनी सेवाएँ दीं। देश की स्वतंत्रता के अमर जवानों के संदर्भ में बात करते हुए उन्होंने वीर सावरकर का उल्लेख किया। श्री माहुरकर ने कहा कि बड़े लोग बड़ी योजनाएँ बनाकर ही महान बनते हैं। सावरकर ने जो भी भविष्यवाणियाँ की थीं वे आज सच साबित हुईं। उन्होंने पाकिस्तान और चीन के संबंध में जो कहा था आज वही हो रहा है। उन्होंने कहा था कि चीन आने वाले समय में भारत की जमीन को कब्जाने की कोशिश करेगा, वो आज भी कर रहा है। भारत में मुस्लिमों के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनको रेडिकल मुस्लिम से दिक्कत है बाकी तो सब रह ही रहे हैं। विदित हो उदय माहुरकर ने दो पुस्तकें लिखी हैं—'मोदी मॉडल्स ऑफ गवर्नेंस' तथा 'वीर सावरकर द मैन हू कुड हैव प्रीवेंटेड पार्टीशन' जो 2021 में प्रकाशित हुई हैं।

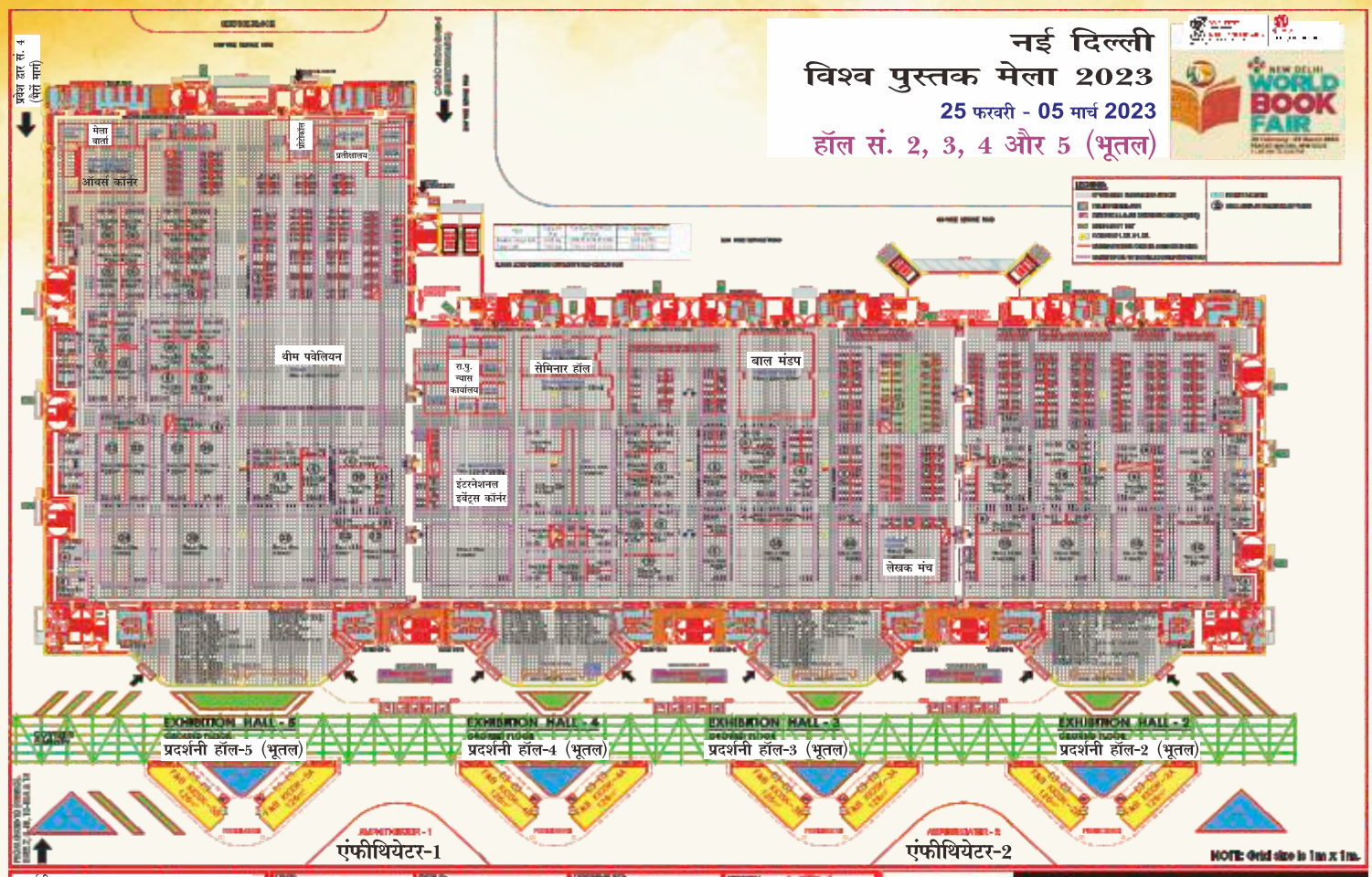

विशेष आकर्षण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

सभी पुस्तक प्रेमियों को आमंत्रित करता है

आएँ और विषयों की एक व्यापक श्रृंखला में से अपनी पसंदीदा पुस्तकों को चुनकर खरीदें।

हिंदी, अंग्रेजी तथा 55 प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविता, जीवनी, लोकोपयोगी विज्ञान, राजनीति, शासन, संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय राज्य, बाल पुस्तकों व नवसाक्षरों हेतु पुस्तकें।

एनबीटी स्टॉल

हॉल सं.: 2, स्टॉल सं.: 48–67; हॉल सं.: 3, स्टॉल सं.: 13–42;
हॉल सं.: 4 (प्रथम तल), स्टॉल सं.: 04–05;
हॉल सं.: 5, स्टॉल सं.: 34–63

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

25 फरवरी
05 मार्च
2023

प्रातः 11:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सह–आयोजक

गुरुवार, दिनांक 02 मार्च, 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	आयोजक
	एनईपी पवेलियन : हॉल सं. 4 (प्रथम तल)	
11.30-12.30	शैक्षिक सीएसआर पहलों पर सत्र	डीवीसी
12.30-01.30	विश्वस्तरीय पठन स्थल का निर्माण : अपने आस-पास पुस्तकें और पुस्तकालय का होना	राजस्थान सरकार
02.00-03.00	सामर्थ्य कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
03.00-04.00	पैनल चर्चा	एनआईटी, पुडुचेरी
04.30-05.30	सेमिनार	आईआईएम, काशीपुर
	इंटरनेशनल इवेंट/युवा कॉर्नर : हॉल सं. 4	
02.00-03.00	कार्यक्रम	ऑस्ट्रियन कल्चर सेंटर
03.00-04.00	स्पेन : इंटरनेशनल पवेलियन—'स्पेनिश भाषा और संस्कृति' पर कार्यशाला	रा.पु. न्यास
	थीम पवेलियन : हॉल सं. 5	
11:30-01:30	मराठी पुस्तक प्रकाशन और सेमिनार; 1. वासुदेव बलवंत फडके : माधवी वैध; 2. अनंत लक्ष्मण कन्हेरे : विनीता तेलंग; 3. गणेश वासुदेव मावलंकर : विभावरी बिडवे	रा.पु. न्यास
02:30-04:30	परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर योगेन्द्र यादव के साथ शौर्यगाथा कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
04:30-06:00	अस्मिता; *संयोजन* : अनूप तिवारी; *सहभागी* : निवेदिता मिश्रा झा (मैथिली), वंदना राग (हिंदी), यशिका दत्ता (अंग्रेजी), वनिता (पंजाबी/संस्कृत)	साहित्य अकादेमी
	सेमिनार हॉल : हॉल सं. 4	
11.30-01.00	'राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका' पर सेमिनार	इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती
02.00-03.30	'सुभाष चंद्र...अदम्य साहस के प्रतीक' एवं अन्य 11 पुस्तकों का विमोचन	प्रखर गूँज पब्लिकेशंस
04.00-05.30	पुस्तक विमोचन : 'न्यू ऑपरचुनिटीज फॉर बुक लवर्स'	इंडियन बुक मार्केट
06.00-07.30	पब्लिशिंग नेक्स्ट इंडस्ट्री का सम्मान समारोह	पब्लिशिंग नेक्स्ट इंडस्ट्री
	बाल मंडप : हॉल सं. 3	
10:00-10:50	अप्रत्याशित यात्रा : पुस्तकों के वह पात्र जो जीवन को बदलकर दुनिया के समान बनाते हैं; *संयोजक* : अनसतासिया कनोडिया	रूसी प्रतिनिधि मंडल
11:00-11:45	कहानी वाचन सत्र; *संयोजक* : सुश्री सुमन वाजपेई	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
11:50-12:30	अंतर-विद्यालयी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
12:45-01:30	अनुभवी अध्यापक द्वारा योग सिखाने का कार्यक्रम; आचार्य बालकृष्ण समूह के बच्चों की प्रस्तुती	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
01:45-02:30	अंतर-स्कूल वर्तनी प्रतियोगिता	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
02:45-03:30	ओरिगामी सत्र; *संयोजक* : सुश्री विनीता झा	रास्ता एनजीओ
03:45-04:30	परिचर्चा : बच्चों के मन में चंद्रमा के प्रति जिज्ञासा; *संयोजक* : गोपालन श्रीनिवासन	सेंटर फॉर स्पेस साइंस एंड अर्थ हैबिटेलिटी
	ऑथर्स कॉर्नर : हॉल सं. 5	
11.30-12.30	'माइंडस्केप्स : अ कैनवस ऑफ इमोशंस इन सोशल वर्ल्ड' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : डॉ. नीना राव	मार्गिका-इंफॉर्मेशन हाइवेज इन...मेंटल हेल्थ केयर! (एनजीओ)
01.30-02.30	पुस्तक विमोचन इक्योनोमिटी, फिलॉस्पी एंड पैरैक्टिस; *लेखक* : आचार्य श्री नानालाल जी	आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृतिक संस्थान
03.00-04.00	'असमिया साहित्य पर युवा अभिव्यक्ति' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : रत्नोतम्मा दास, पंकज प्रतीन बारदोली, दीपामोनी सैकिया	पब्लिकेशन बोर्ड, असम
04.30-05.30	पुस्तक विमोचन : टेन हेड्स ऑफ रावण; *लेखक* : राजीव मल्होत्रा; *वक्ता* : राजीव मल्होत्रा	गरुड़ प्रकाशन
06.00-07.00	कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
	लेखक मंच : हॉल सं. 2	
11.30-12.30	'रामघाट में कोरोना; पुस्तक का लोकार्पण; *वक्ता* : महेश दर्पण, राजकुमार गौतम, राजीव शर्मा, मनोज शर्मा; संचालन : राजीव शर्मा	किताबघर प्रकाशन
01.00-02.00	अप टू युक्रेन पुस्तक पर चर्चा/गृहस्थ संन्यासी; वक्ता : अभिषेक उपाध्याय, रजत शर्मा, संत प्रसाद राय, सुधीर मिश्रा, सिद्धार्थ शंकर गौतम	यश पब्लिकेशन
02:30-03:30	कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
04.00-05.00	कार्यक्रम; *वक्ता* : प्रो. प्रभांशु झा	रा.पु. न्यास
05.30-06.30	पुस्तक 'एस.एस.सी, एम.टी.एस.' पर चर्चा; *वक्ता* : संकेत साह	किक एजुकेशन गेटवे
07.00-08.00	पुस्तक 'नाइट क्लब' पर चर्चा; *लेखक* : अमित खान; *वक्ता* : मीनाक्षी ठाकुर	वेस्टलैंड बुक्स
	सांस्कृतिक कार्यक्रम (एंफीथियेटर)	
06.00-07.00	गान एवं नृत्य	केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

पुस्तक मेला के बारे में सामान्य जानकारी

प्रगति मैदान : कहाँ पर क्या

मेले की अवधि	:	25 फरवरी -05 मार्च, 2023
समय	:	प्रातः 11 से सायं 8 बजे तक
स्थान	:	हॉल सं. 2 से 5

हॉल संख्या 5

थीम मंडप (आजादी का अमृत महोत्सव)
ऑथर्स कॉर्नर

हॉल संख्या 4

गेस्ट ऑफ ऑनर पवेलियन-फ्रांस
जी20 पवेलियन
बिजनेस लाउंज (व्यापार कक्ष)
इंटरनेशनल इवेंट्स कॉर्नर
सेमिनार हॉल

हॉल संख्या 4 (प्रथम तल)

नई शिक्षा नीति 2020 पवेलियन

हॉल संख्या 3

बाल मंडप

हॉल संख्या 3 (मेजानिन)

नई दिल्ली राइट्स टेबल

हॉल संख्या 2

लेखक मंच

पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं

सामान्य एवं व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	:	हॉल सं. 5 और 4 (प्रथम तल)
हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएँ	:	हॉल सं. 2
बच्चों के लिए पुस्तकें	:	हॉल सं. 3

20 मेट्रो स्टेशन पर पुस्तक मेले के टिकट उपलब्ध

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला देखने आने वालों के लिए दिल्ली मेट्रो ने एक अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई है, जिसके तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के 20 मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक मेले के लिए प्रवेश के टिकट उपलब्ध होंगे। वैसे ये टिकट प्रगति मैदान पर भी लिए जा सकते हैं। प्रगति मैदान के **गेट सं. 4** और **10** पर टिकट उपलब्ध हैं। इसके अलावा वेबसाइट : www.itpoonlineticket.in से भी ऑनलाइन टिकट ले सकते हैं। **टिकट दर :** वयस्क– **20** रुपये, बच्चे– **10** रुपये। छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों के लिए प्रवेश निशुल्क है। जिन मेट्रो स्टेशनों पर टिकट उपलब्ध होंगे, वे इस प्रकार हैं–

1. रेड लाइन : रिठाला, दिलशाद गार्डन।

2. ब्लू लाइन : कीर्ति नगर, राजेन्द्र पैलेस, मंडी हाउस, सुप्रीम कोर्ट, वैशाली, नोएडा सेक्टर 18, नोएडा सेक्टर 52, नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी, इंद्रप्रस्थ।

3. येलो लाइन : हुड्डा सिटी सेंटर, हौज खास, विश्वविद्यालय, जीटीबी नगर, जहाँगीरपुरी, कश्मीरी गेट, राजीव चौक, आईएनए।

4. वॉयलेट लाइन : आईटीओ।

प्रवेश : गेट नं 4 (भैरों मार्ग) और गेट नं 10 (मेट्रो स्टेशन के पास)।
नोट : व्हील चेयर की सुविधा गेट नं 4 और 10 पर उपलब्ध है।

QR कोड स्कैन करके नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के टिकट ऑनलाइन खरीदे जा सकते हैं :

भाषावार प्रकाशक

• 1. हिंदी : 178 • 2. उर्दू : 19 • 3. संस्कृत : 3 • 4. मलयालम : 3 • 5. पंजाबी : 7 • 6. तमिल : 2
• 7. बांग्ला : 4 • 8. अंग्रेजी : 325 • 9. असमिया : 1 • 10. सिंधी : 2 • 11. गुजराती : 1 • 12. मैथिली : 2

हमसे यहाँ भी जुड़ें

https://www.twitter.com/nbt_india | https://www.facebook.com/nationalbooktrustindia | https://www.linkedin.com/company/nationalbooktrustindia
https://www.youtube.com/nbtindia | https://www.instagram.com/nbtindia | https://www.kooapp.com/profile/nbtindia
अधिक जानकारी के लिए **www.nbtindia.gov.in** पर जाएँ

मेला वार्ता के लिए विज्ञापन, समाचार, सूचना एवं सुझाव

इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं– **melavartandwbf@gmail.com**
प्रकाशन हेतु सामग्री मेला वार्ता के **हॉल संख्या 4** के पास स्थित कार्यालय को भी दी जा सकती है।
विज्ञापन की दर इस प्रकार है : एक कॉलम, एक-चौथाई पेज–एक दिन के लिए रु. **3,000/-** ;
सभी अंकों के लिए मात्र रु. **25,000/-** विज्ञापन कम-से-कम एक दिन पहले भुगतान के साथ कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

संपादकीय सहयोग
विजय कुमार
कमलेश पाण्डेय
डॉ. अकरम हुसैन

उत्पादन
पवन दूबे

लेआउट एवं सज्जा
ऋतुराज शर्मा

टंकण
भानुप्रिया

संवाददाता
अर्चिता नयन
कंचन
कौशल

मेला वार्ता, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री युवराज मलिक, *निदेशक*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित एवं मे. सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 द्वारा मुद्रित।